RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(6):58-61
ISSN: 2455-3085 (Online)
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i06.012

Research Paper

Double Blind Peer Reviewed/Refereed Journal
https://www.rrjournals.com/

इंटरनेट और जनतंत्रवादी परिवर्तन

नीरज कुमार राय

(असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र) राजकीय महिला महाविद्यालय, ढिंढुई, पट्टी, प्रतापगढ़

ABSTRACT

इंटरनेट के आज तेजी से हो रहे प्रसार ने एकदम नये किस्म के सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक जन–जागरण की शुरूआत कर दी है। ग्लोबल स्तर पर विचारों के आदान–प्रदान के साथ ग्लोबल स्तर के नये सामाजिक आंदोलनों के लिये एक मार्ग प्रशस्त किया है। जनतंत्र के एकदम नये अध्याय की शुरूआत कर दी है। ग्लोबलाइजेशन विरोधी, युद्ध विरोधी, पर्यावरणवादी, स्त्रीवादी और जनतंत्रवादी संघर्षों के पक्ष में विश्वस्तर पर जनता और संगठनों को गोलबंद करने और जागृति पैदा करने में इंटरनेट की महत्वपूर्ण भूमिका है। सामाजिक, राजनीतिक, पर्यावरण, शांति आदि के सवालों पर साधारण जनता को अपने विचार व्यक्त करने और चेतना विकसित करने का सुनहरा अवसर देता है, आम जनता को ज्वलंत सवालों पर विवादों में शामिल करता है, वास्तव में इंटरनेट 'डिजिटल सिटिजन शिक्षा' है। यह ग्लोबल नागरिकता, ग्लोबल अस्मिता, ग्लोबल राज्य, ग्लोबल प्रशासन और ग्लोबल ध्रुवीकरण और लाभबंदी को संभव बनाता है।

Keywords: *इंटरनेट , ग्लोबलाइजेशन, ज्ञान' जनित सूचना प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन, सार्वभौमिक*

Article Publication

Published Online: 15-Jun-2021

***Author's Correspondence**

नीरज कुमार राय

(असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र) राजकीय महिला महाविद्यालय, ढिंढुई, पट्टी, प्रतापगढ़

dr.nkrbhu[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

विश्व की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्नताओं को समाप्त कर एक करने की क्रिया में इंटरनेट की बहुत ही महती भूमिका है। इंटरनेट आधुनिक युग का सबसे प्रभावी माध्यम है। इंटरनेट ने सामाजिक प्रकरण को बढ़ावा दिया जाता है। एशियाई देशों में सन् 1995 से इंटरनेट ने अपने पैर पसारने शुरू किये थे। समृद्ध देशों में इंटरनेट का विस्तार जाल तेजी से फैला। इसके कारण व्यापार कारोबार शिक्षा जनमाध्यम, संस्कृति स्वास्थ्य, विश्वचेतना एवं राजनीति आदि में बुनियादी परिवर्तन आया है। इंटरनेट सेवाएं आज बहुत तेजी से औद्योगिक, व्यापारिक और शहरी इलाकों में अपनी सेवाएं दे रही है, ग्रामीण इलाकों में भी इंटरनेट का निरन्तर धीरे–धीरे हो रहा है । इंटरनेट सिर्फ नेटवर्क नहीं हैं, बल्कि नेटवर्को का नेटवर्क है। ये मुफ्त में सूचनाओं का आदान–प्रदान करते हैं, इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो पता चलता है कि चार्ल्स बादगी ने 1833 मे एस्ट्रोनीति टेबिल कैलकुलेटर को इजाद किया, उन्होंने ही कम्प्यूटर के जन्म की नींव डाली। 21वीं सदी 'ज्ञान' जनित सूचना प्रौद्योगिकी'' के युग में प्रवेश कर गया है और आज एक नये समाज का सृजन हो रहा है, जहां 'पूंजी' और 'श्रम' की अपेक्षा ओर ज्ञान प्राथमिक उत्पादन संसाधन है। ऐसी दशा में वहीं समाज अपने सदस्यों के माननीय आवश्यकताओं को अधिकाधिक संतुष्ट कर पायेगा जो 'ज्ञान की प्रतिष्ठा'को महत्व देगा। (दोषी 2002, चतुर्वेदी 2006)

आज इंटरनेट 'ग्लोबल फिनोमिना' है। यह जनतात्रिक सोच जनतांत्रिक प्रक्रिया और अधिकार बोध को पैदा करने और सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ाने में सबसे आगे है, जातीय और जनजातीय सामाजिक समूहों में चेतना का विस्तार करने उनके अतीत का ज्ञान कराने का महत्वपूर्ण उपकरण है। इंटरनेट के प्रसार ने एक दम नये किस्म के सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक जन–जागरण की शुरूआत की है। ग्लोबल स्तर पर विचारों के आदान–प्रदान के साथ ग्लोबल स्तर के नये सामाजिक आंदोलनों के निये जनता की शिरकत की अनेक सम्भावनाओं को मौका देने का कार्य किया है। इंटरनेट ने जनतंत्र के एकदम नये अध्याय नयी सदी की सम्भावना की शुरूआत की है। ग्लोबलाइजेशन विरोधी युद्ध विरोधी, पर्यावरणवादी स्त्रीवादी और जनतंत्रवादी संघर्षो के पक्ष में विश्वस्तर पर जनता और संगठनों को गोलबंद करने और जागृति पैदा करने में इंटरनेट सबसे आगे है। इंटरनेट उस अमूर्त जनता को जगाता है, जिसे अभी

तक देखा नहीं गया है। उन लोगों को इकट्ठा करता है, जो हाशियें पर है। सामाजिक राजनीतिक, पर्यावरण, शांति आदि के सवालों पर साधारण जनता को अपने विचार व्यक्त करने और चेतना विकसित करने का मौका देता है। आज इंटरनेट से सारा विश्व जुड़ गया है। इंटरनेट और दूसंचार की क्रांसिकारी सुविधाओं में तेजी से आई वृद्धि ने 'ग्लोबलाइजेशन या वैश्वीकरण को प्रक्रिया को बढ़ावा दिया है। फलस्वरूप दुनिया के देश सिमट कर एक दूसरे के निकट आ गये हैं। यह परिवर्तन न केवल आर्थिक स्तर पर हुआ है, वरन् सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर भी हुआ है आज सामान्य आदमी भी इस प्रक्रिया से अप्रभावित हुये बिना नहीं रह पाया है।

इंटरनेट के आज तेजी से हो रहे प्रसार ने एकदम नये किस्म के सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक जन–जागरण की शुरूआत कर दी है। ग्लोबल स्तर पर विचारों के आदान–प्रदान के साथ ग्लोबल स्तर के नये सामाजिक आंदोलनों के लिये एक मार्ग प्रशस्त किया है। जनतंत्र के एकदम नये अध्याय की शुरूआत कर दी है। ग्लोबलाइजेशन विरोधी, युद्ध विरोधी, पर्यावरणवादी, स्त्रीवादी और जनतंत्रवादी संघर्षों के पक्ष में विश्वस्तर पर जनता और संगठनों को गोलबंद करने और जागृति पैदा करने में इंटरनेट की महत्वपूर्ण भूमिका है। सामाजिक, राजनीतिक, पर्यावरण, शांति आदि के सवालों पर साधारण जनता को अपने विचार व्यक्त करने और चेतना विकसित करने का सुनहरा अवसर देता है, आम जनता को ज्वलंत सवालों पर विवादों में शामिल करता है, वास्तव में इंटरनेट 'डिजिटल सिटिजन शिक्षा' है। यह ग्लोबल नागरिकता, ग्लोबल अस्मिता, ग्लोबल राज्य, ग्लोबल प्रशासन और ग्लोबल ध्रुवीकरण और लाभबंदी को संभव बनाता है। (चतुर्वेदी 2006, हेपबर्थ और वाटरसन् 2007)

आज इंटरनेट पर प्रत्येक व्यक्ति के उपयोग की सूचनाएं उपलब्ध हैं। एक्टिव मीडिया के द्वारा कराए गये एक सर्वे में यह तथ्य उजागर हुआ है कि इंटरनेट का प्रयोग करने वाले पुस्तकों को पढ़ने के लिये कम समय देने लगे हैं। सत्तर फीसदी लोग टी0वी0 भी कम देखते हैं, अर्थात् इस सर्वे द्वारा इस बात का खुलासा हुआ है कि आज राजनीतिक संदेश का सभी व्यक्तियों तक पहुंचना एक सामान्य मूलक हो गया है। राजनीतिक सम्प्रेषण की यह समस्या इंटरनेट ने दूर कर दी, अर्थात् राजनीतिक जागरूकता को बढ़ाने में इंटरनेट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। आज संसद की कारवाई ज्यादा पारदर्शी संसदीय कमेटियों के काम ज्यादा पारदर्शी ढंग से हो रहे हैं। संसद और संसदीय कमेटियों में जो कुछ हो रहा है उसकी रिपोर्ट इंटरनेट के माध्यम से सबके सामने उपलब्ध हेाती है, संसदीय कारवाई का, संसदीय जॉच कमेटियो की कारवाई का टी0वी0 से सीधा प्रसारण हो जाने के कारण तथा क्रान्फ्रेसिंग सुविधा उपलब्ध हो जाने के कारण जनता के चुने हुये प्रतिनिधि अपनी जनता के साथ सीधे संवाद कर रहे हैं, जो जनता को मजबूत होने का संकेत है। आज ज्यादा से ज्यादा राजनीतिक दल और स्वैच्छिक संगठन इंटरनेट और कम्प्यूटर का इस्तेमाल कर रहे हैं।

इंटरनेट की क्रान्ति के कारण ही आज हमारे समाज में पाश्चाव्य संस्कृति का बहुत तेजी से प्रचार–प्रसार हो रहा है। संस्कृति हमारी वेश–भूषा, खान–पान, भाषा, साहित्य, विश्वास और मूल्य आदि के रूप में समाज के साथ घुली मिली रहती है। आज भारतीय गावों तक पश्चिमी वस्त्रों की पैढ हो चुकी है, विशेष रूप से महिलाओं के रहन–सहन में पिछले दो दशकों में ही तेजी से परिवर्तन आया है, जो उन्हें आधुनिक बनाने के साथ ही उनकी कार्य–कुशलता बढ़ाने तथा जीवन को सरल बनाने में भी सहायक बना है।आज समाज में विश्वस्तरीय सम्पर्क भाषा अंग्रेजी को ही इंटरनेट के माध्यम से सीखने और बोलने की होड़ सी लगी है। उच्चवर्ग के बच्चों की तरह ही मध्यमवर्ग के बच्चें भी आज अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में ही पढ़ना पंसद करते हैं। इंटरनेट की ही देन है कि आज हम पश्चिमी देशों के त्योहार भी बड़े धूमधाम व उत्साह से मनाने लगे हैं, वेलेन्टाइन डे, मदर्स डे, फादर्स डे, न्यू इयरडे, डॉटर डे आदि। फास्टफूड और बोतलबंद पानी व कोल्डड्रिंग्स हमारे खान–पान का आवश्यक अंग बन गये हैं। आज हमारे पुराने विश्वासों और जीवन–मूल्यों में भी बहुत तेजी से परिवर्तन आ रहा है और हमारी सोच तर्कपूर्ण होती जा रही है। (चतुर्वेदी 2006, हेपबर्थ और वाटरसन् 2007 सिंह 2005)

इंटरनेट के बढ़ते हुये वर्चस्व ने शिक्षा के क्षेत्र में जबरदस्त परिवर्तन कर दिखाया है। इंटरनेट शैक्षिक जगत के लिये वरदान सिद्ध हो चुका है। इंटरनेट की ही देन है कि दिल्ली का छात्र घर बैठे अमेरिका के शिक्षण संस्थाओं की जानकारी प्राप्त कर रहा है, ई–लर्निंग और ई–एजुकेशन ने क्रांति ला दी है, आज शोध संस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों से कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के माध्यम से जोड़कर ऑनलाइन माध्यम द्वारा शिक्षा का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है, कुछ विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा कम्प्यूटर के माध्यम से दे रहे हैं और अब परीक्षा भी ऑनलाइन हो रही है, यहां तक कि टैलीक्राफेसिंग के जरिये यहां के वैज्ञानिक विदेशों में बातचीत करते हैं तथा पुस्तकालयों के ऑनलाइन होने से किसी भी पुस्तक को कम्प्यूटर या मोबाइल के माध्यम से आसानी से पढ़ा जा सकता है, इसलिए हमारे शैक्षणिक परियोजाओं में परियोजनाओं में लैपटाप भी शामिल हो चुका है। चिकित्सा क्षेत्र में भी इंटरनेट ने स्वयं को वरदान सिद्ध कर दिखाया है। टेलीमेडिसिन नामक विद्या जो पूरी तरह इंटरनेट प्रौद्योगिकी पर आधारित है, की सहायता से अब मरीज देश–विदेश के डाक्टर से सलाह – मशवरा कर सकता है। डाक्टर अपनी शंकाओं का निवारण कर सकता है, मरीज की रिपोर्ट देख सकता है और तो और अपनी फीस का ऑनलाइन भुगतान भी ले सकता है। विश्व में कहीं पर भी किसी बीमारी की नयी दवा का अविष्कार पता चलने पर मरीज उसे मंगा सकता है तथा इलाज करवाने वहां जा सकता है, और जानेसे पहले वहां के सम्बन्धितत सभी जानकारी प्राप्त कर सकता है। इंटरनेट ने रेलवे आरक्षण, विज्ञापन आरक्षण, बैकिंग प्रणाली, बीमा क्षेत्र आदि को हमारे द्वार पर एकदम सरल रूप से लाकर खड़ा कर दिया है, विभिन्न सेवाओं के प्रति पहले जहां पर घंटों मात्र भुगतान हेतु खड़े होते थे, वह अब मिनटों का काम हो चुका है। बेहद उबाऊ और थका देने वाले बिल भुगतान सम्बन्धी कार्य अब हम घर बैठे नेट के माध्यम से कर सकते हैं। घर बैठे अब हम

अपने रेलवे आरक्षण की स्थिति, ट्रेन के आवागमन की स्थिति, बर्थ की स्थिति इत्यादि किंगर टिप्स पर जान सकते हैं। नेट के साथ वेबकैम का इस्तेमाल कर अपने शुभचिन्तकों, पारिवारिक सदस्यों से घर बैठे आमने–सामन सम्पर्क कर सकते हैं। इंटरनेट पर जो काम करते रहते है, उनके बारे में यह मिथ है कि वे सबसे कटे रहते हैं वे आसामाजिक हो रहे हैं उनके जीवन मे आमने–सामने मिलने का अनुभव खत्म हो गया। माता–पिता को कहा जा रहा है कि उनके बच्चे का बचपना छिन रहा है वे एक तरह से अपंग होते जा रहे हैं हर समय ऑनलाइन पर ही रहते हैं, लेकिन सच्चाई का एक अन्य पहलू भी है, जो लोग इंटरनेट पर ऑनलाइन रहते हैं, उनके शिक्षण के उपकरण बदल गये हैं आधुनिक शिक्षक और स्मार्ट बच्चे अब इंटरनेट का प्रयोग कर तरह–तरह का नया ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। दुनिया का फासला कर होता जा रहा है, आज दूरी उतनी ही रह गयी है, जितनी माउस क्लिक करने में होती है। समाज के सभी पेशें और सामाजिक वर्गो के लिये इंटरनेट ज्ञान प्राप्त करने, अभिव्यक्ति और सम्पर्क की अनंत सम्भावनाओं को साकार किया है। है। (चतुर्वेदी 2006, पाटिल एवं गोपाल 2003)

'इंटरनेट स्वभावतः सबवर्सिव है डेविड बलकॉम ने ई–मेल के अपने अनुभव के बारे में लिखा है–'कि ई–मेल एक संदर्भहीन अनुभव है।'' यहां प्रस्तुत सामग्री स्वयं संदर्भ है, ई–मेल पर लेखन और अनुभव एक ही साथ करते है, लेखन में पहले अनुभव करते थे, बाद में लिखते थे, यहां लेखन ही है सिर्फ उसका आधार बदल गया है, अब यह कम्प्यूटर में है एक जमाना था हमारे पीछे शब्द चल रहे थे, पर अब सिर्फ प्रतिक्रिया चलती है ई–मेल हम आत्माभिव्यक्ति के लिये लिखते हैं, हम चाहते है कि लोग हमें जाने और पंसद करे, जिसे इंटरनेट ने साकार कर दिखाया। सूचना तकनीक के ज्यादातर विज्ञापन युवाओं को सबोधित है। वे ही सूचना क्रांति का मुख्य सामाजिक आधार है। डिजिटल क्रांति में वे आग्रणी हैं। वे अपने लिये नई जगह बना रहे हैं। वे इंटरनेट और डिजिटल जगत में मुक्त और आरामदायक भाव से विचरण कर रहे हैं, जबकि व्यस्कों और प्रौढ़ो में यह भाव नहीं है। बच्चें उन जगहों पर भी चले जाते हैं, जहां प्रौढ़ जाने में संकोच करते हैं। व्यस्कों की नजर में कम्प्यूटर/इंटरनेट कार्य के लिये है, कक्षा के लिये है, जबकि युवा वर्ग के लिये यह सामाजिक जीवन के पुनर्सृजन का रूप है। फलस्वरूव इंटरनेट द्वारा उनके कार्य करने का तरीका बदला है। इंटरनेट के प्रयोग के कारण आज युवा संस्कृति और सरकार के कार्यकलापों में शिरकत करने लगे हैं, बड़े अधिकारियों से सवाल पूंछने की शक्ति हासिल कर लेते हैं, इससे उन्हें अपनी पहचान मिलती है, और वे अपने को स्वायक्त महसूस करते हैं। (चतुर्वेदी 2006, जोशी 1993, शर्मा 2007)

इंटरनेट का सबसे बड़ा उपभोक्ता बच्चे है, इंटरनेट के आने के बाद बच्चों पर इसके दुरूप्रभाव और स्त्रियों के शोषण की घटनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। पोर्न वेबसाइट द्वारा बच्चों और महिलाओं का खुल्लमखुल्ला वस्तुकरण किया जा रहा है। पोर्न सामग्री को सस्ता और आसानी से उपलब्ध कराने में डिजिटल टेक्नोलॉजी का बहुत बड़ा योगदान है। डिजिटल फोटोग्राफी के द्वारा दुरूप्रयोग करने वाले फोटों का सैकड़ों फोटोग्राफ लिया जा सकता है। उन्हें हाईस्पीड इंटरनेट के जरिये कहीं भी तुरंत भेज सकते हैं। पहले सेक्स सामग्री को चोरी–छिपे बेचते थे, चोरी–छिपे पढ़ते थे। स्त्रियों के लिये सेक्स सामग्री तो एकदम दुर्लभ थी किन्तु इंटरनेट ने इसे सबको मुफ्त में उपलब्ध करा दिया है। आज कोई भी व्यक्ति चाहे तो अपनी सेक्स सम्बन्धी इच्छाओं को इंटरनेट पर व्यक्त कर सकता है। उसकी प्राइवेसी भी बची रहेगी। इंटरनेट पर पोर्नोग्राफ के आने के बाद यह कहा गया कि यह पोर्न कामुकता वे युग की वापसी है। यह रीतिकाल का नवजागरण है। इंटरनेट के बढ़ते हुये वर्चस्व के कारण ही आज डिजिटल युग मे संप्रभुता का महत्व घट कर 'पैसे' ने ले लिया है, जो जितना ज्यादा कमाता है उसकी पहचान अपने राष्ट्र की पहचान से जुड़ने लगता है, फलस्वरूप इस नये युग का मंत्र है– 'डिजिटल मनी' आज सभी क्षेत्रों में डिजिटल मनी प्रवेश कर गई है, इसके कारण मुद्रा के निर्माण में जो लागत आती थी, उसके रखरखाव में जो दिक्कते आती थी, वे सब धीरे–धीरे गायब होती जा रही है करेंसी सिकुड़कर स्थानीय बनकर रह गई है, इंटरनेट के कारण ही ''डिजिटल मनी ग्लोबल मनी'' का रूप धारण करती जा रही है। आज विश्व स्तर पर अनेक देशों की एक ही करेंसी को देखा जा सकता है, यूरों डांलर का जनम इसलिए हुआ है, अब स्थानीय नहीं, मुद्रा का युग नेट द्वारा संभव हो चुका है, उसी में लेन देन होता है, अंतरिक्ष से स्थानांतरित होकर आनेवाली करेंसी ठीक समय पर हमारी जेब में या खाते में आ जाती है, ऐसा संभव है जब करेंसी 'वाइट्स' में तब्दील हो जाती है और 'वाइट्स की असीमित पहुँच है। इंटरनेट के माध्यम से आज हम करोड़ो कनेक्शनों को एक साथ जुड़ा हुआ देख सकते हैं, उनके सामने सब एक्सपोज है, ये इंअरनेट कनेक्शन हमें अध्याय करा रहे हैं कि ज्ञान हमारे सामने उजागर है, लेकिन यह एक तरह का अंधविश्वास है। कम्प्यूटर ने मनुष्य की क्षमता को नई बुलंदियों तक पहुँचा दिया है। कम्प्यूटर की कार्य प्रणाली बहुत जटिल और खर्चीली है, जबकि देखने में यह बेहद सरल और सुबोध जान पड़ती है। वास्तविकता यही है कि कम्प्यूटर , इंटरनेट हमे ज्ञान से दूर से जा रहे हैं। हम सूचनाओं को ही ज्ञान समझने लगते हैं, जबकि सूचनाएं या ज्ञान सिर्फ कच्चा माल भर है। कम्प्यूटर में हम अगणित चीजें रख सकते हैं, जोड़ सकते है, बेहतर तरीके से संपादन कर सकते है, इस सारी प्रक्रिया से हमने यही आभास होता है हम ज्ञान को अपनी स्मृति में संग्रहित कर रहे हैं, किन्तु सच यही है कि ज्ञान स्मृति से पलायन करने लगता है। हैं। (चतुर्वेदी 2006, जोशी 1993, शर्मा 2007)

निष्कर्ष –

आज इंटरनेट का प्रयोग चिकित्सा, विज्ञान औषधि स्थापत्य दर्शन, मनोरंजन, मानवविज्ञान, अंतरिक्ष, कागकाज की शैली, दैनिक उपयोग में जनमाध्यम, डिजिटल आदि सभी क्षेत्रों में बहुत तेजी से बढ़ा है, इंटरनेट के बिना तो अब जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इस समूची प्रक्रिया ने

परवर्ती पूंजीवाद में पूंजी के केन्द्रीकरण को बढ़ा दिया है, आज वर्जुअल रियलिटि ने सत्य को सर्वसुलभ अतिसरल और कृत्रिम बना दिया है, जटिलता को छिपा लिया है, इंटरनेट का प्रभाव ही है कि आज प्रत्येक सूचना सार्वभौमिक होती जा रही है।

सन्दर्भ सूची–

1. दोषी, एस0एल0 (2002) आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव समाज शास्त्रीय सिद्धान्त रामा पब्लिकेश, नई दिल्ली
2. चतुर्वेदी जगदीश्वर (2006) हाइपर टक्स्ट, वर्चुअल रियलिटी और इंटरनेट, अनामिका पब्लिशर्स नई दिल्ली
3. सिंह, अशोक कुमार (2005) वैश्वीकरण के युग में जनतंत्र एवं विकास, द यू0पी0 जनरल आफ पालिटिक्स साइन्स
4. पाटिल एवं गोपाल (2003) पांलिटिक्स आफ ग्लोबलाइजेशन, आथर प्रेस, दिल्ली
5. जोशी, एस0आर0 (1993) सोशल एण्ड कल्वरल इम्पेक्ट आफ केबल एण्ड सेटेलाइट टी0वी0 डेवलेपमेन्ट एण्ड एजुकेशन कम्युनिकेशन यूनिट, इसरों अहमदाबाद
6. शर्मा आर0के0 (2007) दी रोल आफ मीडिया इन सोसायटी अमर पब्लिकेशन सागर
7. हेपबर्थ मार्क ई0 और वाटरसन् (2007) 'इन्फोमेंशन टेक्नोलोजी एण्ड दी स्पेटिरल डाइनेमिक्स ऑफ कैपिटल, इन्फोरमेशन इकोनामिक्स एण्ड पालिटी,